अध्याय – 2

भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद : सूरदास

जन्म – सन् 1483 ई.
मृत्यु – सन् 1563 ई.

सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था। रुनकता (आगरा) के गऊ घाट पर उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। उन्होंने सूरदास को वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया तथा भागवत कथा सुनाई। जिसके आधार पर कवि ने उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया। सूरदास ने ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चित्रण किया है। वे भक्ति, शृंगार एवं वात्सल्य के अनुपम कवि हैं। सूरदास की प्रमुख रचनाएँ तीन मानी जाती हैं– 1. सूरसागर 2.सूर सारावली 3. साहित्य लहरी । इनमें से सूरसागर इनकी अक्षय कीर्ति का आधार ग्रंथ है।

सूरदास अष्टछाप के शीर्ष कवि हैं। कृष्ण के लोकरंजक रूप को काव्य का आधार बनाकर उन्होंने जयदेव और विद्यापति की गान परम्परा को आगे बढ़ाया। सूरदास का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। उनके बारे में सच ही कहा गया है–

सूर सूर, तुलसी ससि, उडुगण केसवदास।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास।।

इस पाठ में सूरसागर के भ्रमरगीत से छह पद लिए गए हैं। श्रीकृष्ण ने विरह–वेदना से व्यथित गोपियों को सान्त्वना देने हेतु उद्धव को भेजा। उद्धव उन्हें निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देते हैं। तभी वहाँ एक भौंरा आता है। गोपियाँ भ्रमर के बहाने उद्धव को जवाब देती हैं। उन्हें कड़वी ककड़ी के समान योग का उपदेश अरुचिकर लगता हैं। उनके लिए मिलन ओर विरह दोनों स्थितियों में श्रीकृष्ण से लगाव लाभदायक है। मथुरा काजल की कोठरी के समान है। उनकी आँखें कृष्ण–दर्शन को व्याकुल हैं। वे निर्गुण ब्रह्म के रूप, रंग, निवास, माता–पिता आदि का ब्यौरा जानना चाहती हैं। कृष्ण की याद दिलाने वाले वन–उपवन, लतावितान, यमुना आदि विरहकाल में भीषण संतापदायक बन गए हैं।

भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद

हमारे हरि हारिल की लकरी ।
मन बच क्रम नंदनंदन सो उर यह दृढ़ करि पकरि ।।
जागत सोवत सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जकरी ।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि! ज्यों करुई ककरी ।।
सोई व्याधि हमैं लै आए देखी सुनी न करी ।
यह तौ सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी ।।

हम तो दुहूँ भाँति फल पायो ।
जो ब्रजनाथ मिलैं तो नीको, नातरु जग जस गायो।।
कहँ वै गोकुल की गोपी सब बरनहीन लघुजाती।
कहँ वै कमला के स्वामी संग मिलि बैठीं इक पाँती ।।
निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर, ते भए घोषनिवासी ।
ता ऊपर अब साँच कहों धौं मुक्ति कौन की दासी ?
जोग–कथा, पा लागों ऊधो, ना कहु बारम्बार ।
सूर स्याम तजि और भजै जो ताकी जननी छार ।।

बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे !
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे ।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे ।
तिनके संग अधिक छवि उपजत कमलनैन मनिआरे ।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना जाय पखारे ।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम–गुन न्यारे ।।

अँखियाँ हरि–दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची ये बतियाँ सुनी रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी ।
अब इन जोग–सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी ।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी ।
सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता है सूखी ।।

निर्गुन कौन देस को बासी ?
मधुकर ! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी ।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी ?
कैसो बरन, भेस है कैसो, केहि रस में अभिलासी ।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे ! कहैगो गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी ।।

बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं ।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं ।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं अलि गुंजैं ।

पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजैं ।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों विरह कदन करि मारत लुंजैं ।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं ।।

शब्दार्थ–

हरि – श्रीकृष्ण	हारिल – एक प्रकार का पक्षी
जकरी – जकड़ी हुई	करुई ककरी – कड़वी ककड़ी
तिन्है – उन्हें	चकरी –फिरकी
राची – रंगी हुई	झूखी – दुःख से पछताई (खीजी)
पतूखी – पत्ते का दोना	बारक – एक बार।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सूरदास की भक्ति मानी जाती है –

(अ) सखा भाव की (ब) दास्य भाव की
(स) माधुर्य भाव की (द) कान्ता भाव की ( )

2. सूरदास ने अँखिया को भूखी बताया है –

(अ) प्राकृतिक सौन्दर्य की (ब) सुरमा लगाने की
(स) नींद लेने की (द) हरिदर्शन की ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1.उद्धव को गोपियों ने ऐसे कौन से प्रश्न किए कि उद्धव ठगा–सा रह गया?
2. हारिल पक्षी की क्या विशेषता हैं ? बताइए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. गोपियों को उद्धव का योग (जोग) संदेश किसके समान लग रहा है ?
2. ''मानहु नील भाट ते काढ़े लै यमुना ज्यों पखारे।'' पंक्ति में कौनसा अलंकार है ? परिभाषा लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सूरदास के पदों में वर्णित प्रेमभक्ति भावना का वर्णन कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. अँखियाँ हरि–दरसन ..... सरिता है सूखी।

* * * * *